

C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

सामान्य निर्देशः

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खंड - क

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

लिखिए:

(1×2=2) (2×3=6)8

संसार में सबसे बड़ी चीज आनन्द माना गया है। दुनिया में सब जगह जितनी भाग-दौड़ दिखलाई पड़ती है और जितने भी प्रयत्न किए जाते हैं उन सबका अन्तिम उद्देश्य आनन्द की प्राप्ति ही होता है पर अधिकांश लोग यह नहीं समझते कि आनन्द भौतिक पदार्थों से कदापि नहीं मिल सकता। वह तो आत्मा का गुण है और इसलिए उसकी प्राप्ति आध्यात्मिक प्रयत्नों द्वारा ही संभव है।

यदि मनुष्य वास्तव में आत्मिक सुख को खरीदना चाहे तो उसे इसके बदले में उसी के समकक्ष चीज देनी होगी। यदि वास्तव में हम संयम, सहिष्णुता, धैर्य, सहानुभूति और प्रेम को अपने हृदय में उत्पन्न करना चाहें तो हमें इनके बदले में अपनी मनोवृत्तियों की उच्छृंखलता, स्वार्थ, लम्पटता और मानसिक चपलता से विदा लेनी होगी। लोभी मनुष्य का द्रव्य से चाहे कितना ही प्रेम क्यों न हो यदि वह अपने शारीरिक आराम को चाहता है, तो उसे अपना द्रव्य अवश्य खर्च करना पड़ेगा। इसी भाँति स्वार्थ का त्याग करने में हमें कितना ही कष्ट क्यों न हो, बिना उससे छुटकारा पाये हम आत्मिक उन्नति प्राप्त नहीं कर सकते। धन का सच्चा उपयोग यही है कि उसके द्वारा मनुष्य जाति को अपनी सुख-सुविधा जुटाने में सुविधा हो। वह कृपण, जो लक्ष-लक्षमुद्राओं के रहते भी द्रव्य-प्रेम के कारण आवश्यक सामग्रियों को

नहीं जुटाता, निस्संदेह दया का पात्र है। इसी भाँति चैतन्य जगत में जो व्यक्ति अपनी मानसिक वृत्तियों के बदले में सच्चे सुख और शान्ति को प्राप्त करने में हिचकिचाता है वह मूढ़बुद्धि है। प्रकृति ने मनुष्य के हृदय में क्रोध की सृष्टि इसीलिए की है कि उस पर विजय प्राप्त करके क्षमा कर दी जाय। स्वार्थ के वशीभूत होकर मनुष्य दूसरों की सुख-सामग्री को छीन-छीनकर अपने सुख के लिए एकत्र करता है। दूसरों की उसे जरा भी चिन्ता नहीं रहती। अतएव वह कृपण मनुष्य के सदृश्य अपना द्रव्य अपने ही पास रखना चाहता है परन्तु धर्म का, सिद्धान्त इसके विपरीत है। धर्म चाहता है कि मनुष्य अपने सुख का उपभोग स्वतः भी करे और दूसरे मनुष्यों को सुख देने के लिए भी तत्पर रहे।

1. संसार की सबसे से बड़ी चीज क्या और क्यों हैं?
2. अधिकांश लोग क्या नहीं समझते हैं?
3. धन का उपयोग क्या है?
4. मनुष्य के हृदय में क्रोध कि सृष्टि क्यों हुई है?
5. मूढ़बुद्धि कौन है?

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2x3=6

माटी, तुझे प्रणाम!

मेरे पुण्य देश की माटी, तू कितनी अभिराम!

तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर,
क्षण-भर में ही भूल गया मैं शत्रु-यंत्रणा क्रूर,
सुख स्फूर्ति का इसका या मैं हुआ पुनःसंचार-
लगता जैसे आज युगों के बाद मिला विश्राम!

माटी तुझे प्रणाम!

तुझ से बिछुड़ मिला प्राणों को कभी न पल-भर चैन,

तेरे दर्शन हेतु रात-दिन तरस रहे थे नैन,

धनी हुआ तेरे चरणों में आकर यह अस्तित्व-

हुई साधना सफल, भक्त को प्राप्त हो गए राम!

माटी, तुझे प्रणाम!

अमर मृत्तिके! लगती तू पारस से बढ़कार आज,
कारा-जड़ जीवन सचेत फिर, तुझको छूकर आज,
मरणशील हम, किन्तु अमरतू, है अमर्त्य यह धाम-
हम मर-मरकर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम!

1. कवि किसे प्रणाम कर रहा है?
2. मातृभूमि को प्रणाम करने के बाद कैसी अनुभूति होती है?
3. माटी से बिछुड़ने तथा मिलने पर कवि को कैसा अनुभव हुआ?

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×2=4)

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
सृष्टि का आह्वान फिर-फिर!
वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा,
धूलि-धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,
रात-सा दिन हो गया फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सवेरा,

1. 'वह उठी आँधी कि नभ में छा गया सहसा अँधेरा' इन पंक्तियों द्वारा कवि क्या समझाने का प्रयास कर रहा है?
2. 'रात-सा दिन हो गया' से आप क्या समझते हैं?

खंड - ख

- प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए: 1
उनी, पत्रकार
- ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए: 1
अभिनय, उत्तीर्ण
- ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए: 1
विख्यात, स्वल्प
- घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए: 1
नौवाँ, प्रभुत्व
- ड.) निम्नलिखित विग्रह का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखें: 3
1 भय से भीत
2. देह रूपी लता
3. श्वेत है अंबर (वस्त्र) अर्थात् सरस्वती जी
- च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए : 4
1. चीनी मीठी होती है।
2. काश मेरे भी पंख होते।
3. कृपया आप सब शांत रहे।
4. अहा! क्या दृश्य है।
- छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए: 4
1. मन की मन ही माँझ
2. मानुबंस राकेस कलंकु
3. काँच को करके दिखा देते हैं, वे उज्ज्वल रतन
4. पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: (1+2+2)=5

सेनापति ने दुःख प्रकट करते हुए कहा, कि कर्तव्य के अनुरोध से मुझे यह मकान गिराना ही होगा। इस पर बालिका ने अपना परिचय बताते हुए कहा कि - “मैं जानती हूँ, कि आप जनरल ‘हे’ हैं। आपकी कन्या मेरी मैं और मुझ में बहुत प्रेम संबंध था। कई वर्ष पूर्व मेरी मेरे पास बराबर आती थी और मुझे हृदय से चाहती थी। उस समय आप भी हमारे यहाँ आते थे और मुझे अपनी पुत्री के ही समान प्यार करते थे। मालूम होता है, कि आप वे सब बातें भूल गए हैं। मेरी की मृत्यु से मैं बहुत दुखी हुई थी; उसकी एक चिट्ठी मेरे पास अब तक है।” यह सुनकर सेनापति के होश उड़ गए। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, और फिर उस बालिका को भी पहिचाना, और कहा- “अरे यह तो नाना साहब की कन्या मैना है!”

- क) उपर्युक्त गद्यांश में किसके मकान को गिराने की बात की जा रही है?
ख) सेनापति के होश क्यों उड़ गए?
ग) मैना ने सेनापति को क्या याद दिलाया?

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. ‘साँवले सपनों की याद’ पाठ में लेखक ने सलीम अली के व्यक्तित्व का जो चित्र खींचा है उसे अपने शब्दों में लिखिए।
2. ‘प्रेमचंद के फटे जूते’ पाठ में ‘टीले’ शब्द का प्रयोग किन संदर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?
3. ‘हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था’। - उक्त कथन के अनुसार हमारे आचार-व्यवहार के तरीके वेशभूषा के आधार पर तय होते हैं। आपकी समझ से यह उचित है अथवा अनुचित, विचार व्यक्त करें।
4. लेखिका महादेवी ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (1+2+2)=5

एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर
दूर उड़ती है गगन में।
औ यहीं से
भूमि ऊँची है जहाँ से
रेल की पटरी गयी है
ट्रेन का टाइम नहीं है
में यहाँ स्वच्छंद हूँ
जाना नहीं है।

1. काले माथे और सफेद पंखों वाली चिड़िया आपकी दृष्टि में किस प्रकार के व्यक्तित्व का प्रतीक हो सकती है?
2. 'टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर' पंक्ति का क्या अर्थ है?
3. 'में यहाँ स्वच्छंद हूँ' - पंक्तियों से कवि क्या तात्पर्य है?

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

1. मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गई है?
2. कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?
3. आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए? उन्हें क्या करने के मौके मिलने चाहिए?
4. वैभव की रखवाली-सी, कोकिल बोलो तो!- पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

प्र. 9. शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की - समाज को कैसे व्यक्तित्व की जरूरत है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

खंड - घ

- प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10
- 'वृक्ष लगाओ देश बचाओ'
 - बढ़ती जनसँख्या
- प्र.11. अपने छोटे भाई को गणतंत्र दिवस का महत्त्व पत्र द्वारा समझाइए। 5
- प्र. 12 दो मित्र के मध्य व्यायाम के महत्त्व को लेकर हो रहे संवाद लिखिए। 5

C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

सामान्य निर्देशः

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खंड - क

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

लिखिए:

(1×2=2) (2×3=6)8

संसार में सबसे बड़ी चीज आनन्द माना गया है। दुनिया में सब जगह जितनी भाग-दौड़ दिखलाई पड़ती है और जितने भी प्रयत्न किए जाते हैं उन सबका अन्तिम उद्देश्य आनन्द की प्राप्ति ही होता है पर अधिकांश लोग यह नहीं समझते कि आनन्द भौतिक पदार्थों से कदापि नहीं मिल सकता। वह तो आत्मा का गुण है और इसलिए उसकी प्राप्ति आध्यात्मिक प्रयत्नों द्वारा ही संभव है।

यदि मनुष्य वास्तव में आत्मिक सुख को खरीदना चाहे तो उसे इसके बदले में उसी के समकक्ष चीज देनी होगी। यदि वास्तव में हम संयम, सहिष्णुता, धैर्य, सहानुभूति और प्रेम को अपने हृदय में उत्पन्न करना चाहें तो हमें इनके बदले में अपनी मनोवृत्तियों की उच्छृंखलता, स्वार्थ, लम्पटता और मानसिक चपलता से विदा लेनी होगी। लोभी मनुष्य का द्रव्य से चाहे कितना ही प्रेम क्यों न हो यदि वह अपने शारीरिक आराम को चाहता है, तो उसे अपना द्रव्य अवश्य खर्च करना पड़ेगा। इसी भाँति स्वार्थ का त्याग करने में हमें कितना ही कष्ट क्यों न हो, बिना उससे छुटकारा पाये हम आत्मिक उन्नति प्राप्त नहीं कर सकते। धन का सच्चा उपयोग यही है कि उसके द्वारा मनुष्य जाति को अपनी सुख-सुविधा जुटाने में सुविधा हो। वह कृपण, जो लक्ष-लक्षमुद्राओं के रहते भी द्रव्य-प्रेम के कारण आवश्यक सामग्रियों को

नहीं जुटाता, निस्संदेह दया का पात्र है। इसी भाँति चैतन्य जगत में जो व्यक्ति अपनी मानसिक वृत्तियों के बदले में सच्चे सुख और शान्ति को प्राप्त करने में हिचकिचाता है वह मूढ़बुद्धि है। प्रकृति ने मनुष्य के हृदय में क्रोध की सृष्टि इसीलिए की है कि उस पर विजय प्राप्त करके क्षमा कर दी जाय। स्वार्थ के वशीभूत होकर मनुष्य दूसरों की सुख-सामग्री को छीन-छीनकर अपने सुख के लिए एकत्र करता है। दूसरों की उसे जरा भी चिन्ता नहीं रहती। अतएव वह कृपण मनुष्य के सदृश्य अपना द्रव्य अपने ही पास रखना चाहता है परन्तु धर्म का, सिद्धान्त इसके विपरीत है। धर्म चाहता है कि मनुष्य अपने सुख का उपभोग स्वतः भी करे और दूसरे मनुष्यों को सुख देने के लिए भी तत्पर रहे।

1. संसार की सबसे से बड़ी चीज क्या और क्यों हैं?

उत्तर : संसार में सबसे बड़ी चीज आनन्द है। दुनिया में सब जगह जितनी भाग-दौड़ दिखलाई पड़ती है और जितने भी प्रयत्न किए जाते हैं उन सबका अन्तिम उद्देश्य आनन्द की प्राप्ति ही होता है।

2. अधिकांश लोग क्या नहीं समझते हैं?

उत्तर : अधिकांश लोग यह नहीं समझते कि आनन्द भौतिक पदार्थों से कदापि नहीं मिल सकता। वह तो आत्मा का गुण है और इसलिए उसकी प्राप्ति आध्यात्मिक प्रयत्नों द्वारा ही संभव है।

3. धन का उपयोग क्या है?

उत्तर : धन का सच्चा उपयोग यही है कि उसके द्वारा मनुष्य जाति को अपनी सुख-सुविधा जुटाने में सुविधा हो।

4. मनुष्य के हृदय में क्रोध कि सृष्टि क्यों हुई है?

उत्तर : प्रकृति ने मनुष्य के हृदय में क्रोध की सृष्टि इसीलिए की है कि उस पर विजय प्राप्त करके क्षमा कर दी जाय।

5. मूढबुद्धि कौन है?

उत्तर : चैतन्य जगत में जो व्यक्ति अपनी मानसिक वृत्तियों के बदले में सच्चे सुख और शान्ति को प्राप्त करने में हिचकिचाता है वह मूढबुद्धि है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2x3=6

माटी, तुझे प्रणाम!

मेरे पुण्य देश की माटी, तू कितनी अभिराम!

तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर,
क्षण-भर में ही भूल गया मैं शत्रु-यंत्रणा क्रूर,
सुख स्फूर्ति का इसका या मैं हुआ पुनःसंचार-
लगता जैसे आज युगों के बाद मिला विश्राम!

माटी तुझे प्रणाम!

तुझ से बिछुड़ मिला प्राणों को कभी न पल-भर चैन,

तेरे दर्शन हेतु रात-दिन तरस रहे थे नैन,
धनी हुआ तेरे चरणों में आकर यह अस्तित्व-
हुई साधना सफल, भक्त को प्राप्त हो गए राम!

माटी, तुझे प्रणाम!

अमर मृत्तिके! लगती तू पारस से बढ़कार आज,
कारा-जड़ जीवन सचेत फिर, तुझको छूकर आज,
मरणशील हम, किन्तु अमरतू, है अमर्त्य यह धाम-
हम मर-मरकर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम!

1. कवि किसे प्रणाम कर रहा है?

उत्तर : कवि अपनी जन्मभूमि की मिट्टी को प्रणाम कर रहा है।

2. मातृभूमि को प्रणाम करने के बाद कैसी अनुभूति होती है?

उत्तर : मिट्टी को छूते ही कवि के सारे कष्ट और यंत्रणाएं दूर हो गई, शरीर में स्फूर्ति का संचार हो गया कवि को मिट्टी को छूते ही ऐसा लगा जैसे युगों बाद उसे ऐसा विश्राम मिला हो।

3. माटी से बिछुड़ने तथा मिलने पर कवि को कैसा अनुभव हुआ?

उत्तर : माटी से बिछुड़कर कवि को कभी भी चैन न मिला। वह दिनरात माटी के लिए तरसता रहा जैसे एक भक्त अपने ईश्वर को पाने के लिए तड़पता है, ठीक उसी प्रकार कवि अपनी माटी के लिए तड़पता था।

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×2=4)

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
सृष्टि का आह्वान फिर-फिर!
वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा,
धूलि-धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,
रात-सा दिन हो गया फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सवेरा,

1. 'वह उठी आँधी कि नभ में छा गया सहसा अँधेरा' इन पंक्तियों द्वारा कवि क्या समझाने का प्रयास कर रहा है?

उत्तर : वह उठी आँधी कि नभ में छा गया सहसा अँधेरा' इन पंक्तियों द्वारा कवि मनुष्य जीवन में आने वाली आँधी अर्थात् समस्याओं को समझाने का प्रयास कर रहा है। मनुष्य चाहे कितना भी उत्साह और उमंग से काम कर रहा हो परन्तु

अचानक से आने वाली बाधाएँ उसमें निराशा रूपी अंधकार को जन्म दे ही देती हैं।

2. 'रात-सा दिन हो गया' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : रात-सा दिन हो गया' पंक्ति आँधी की भयावहता को दर्शा रही है। आँधी के आने से पूरा आकाश धूल से भर गया। आँधी की इस भयावहता ने रात को भी दिन में तब्दील कर दिया। सारे प्राणी भय के मारे अपने-अपने घरों में दुबक गए। इस तरह कवि ने रात सा दिन हो गया पंक्ति द्वारा आँधी के आने से उपस्थित दृश्य का और मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है।

खंड - ख

- प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए: 1
उनी, पत्रकार
उत्तर : ई, कार
- ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए: 1
अभिनय, उत्तीर्ण
उत्तर : अभि, उत्
- ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए: 1
विख्यात , स्वल्प
उत्तर : वि+ख्यात, सु+अल्प
- घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए: 1
नौवाँ, प्रभुत्व
उत्तर : नौ+वाँ, प्रभु+त्व

ड.) निम्नलिखित विग्रह का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखें: 3

1. भय से भीत
2. देह रूपी लता
3. श्वेत है अंबर (वस्त्र) अर्थात् सरस्वती जी

विग्रह	समस्त पद	समास
भय से भीत	भयभीत	तत्पुरुष
देह रूपी लता	देहलता	कर्मधारय
श्वेत है अंबर (वस्त्र) अर्थात् सरस्वती जी	श्वेताम्बर	बहुब्रीहि

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए :

4

1. चीनी मीठी होती है।

उत्तर : विधानार्थक वाक्य

2. काश मेरे भी पंख होते।

उत्तर : इच्छा वाचक वाक्य

3. कृपया आप सब शांत रहे।

उत्तर : आज्ञार्थक वाक्य

4. अहा! क्या दृश्य है।

उत्तर : विस्मयादि बोधक वाक्य

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए:

4

1. मन की मन ही माँझ

उत्तर : अनुप्रास अलंकार

2. मानुबंस राकेस कलंकु

उत्तर : रूपक अलंकार

3. काँच को करके दिखा देते हैं, वे उज्ज्वल रतन

उत्तर : अतिशयोक्ति अलंकार

4. पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के

उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: (1+2+2)=5

सेनापति ने दुःख प्रकट करते हुए कहा, कि कर्तव्य के अनुरोध से मुझे यह मकान गिराना ही होगा। इस पर बालिका ने अपना परिचय बताते हुए कहा कि - “मैं जानती हूँ, कि आप जनरल ‘हे’ हैं। आपकी कन्या मेरी मैं और मुझ में बहुत प्रेम संबंध था। कई वर्ष पूर्व मेरी मेरे पास बराबर आती थी और मुझे हृदय से चाहती थी। उस समय आप भी हमारे यहाँ आते थे और मुझे अपनी पुत्री के ही समान प्यार करते थे। मालूम होता है, कि आप वे सब बातें भूल गए हैं। मेरी की मृत्यु से मैं बहुत दुखी हुई थी; उसकी एक चिट्ठी मेरे पास अब तक है।” यह सुनकर सेनापति के होश उड़ गए। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, और फिर उस बालिका को भी पहिचाना, और कहा- “अरे यह तो नाना साहब की कन्या मैना है।”

क) उपर्युक्त गद्यांश में किसके मकान को गिराने की बात की जा रही है?

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश में नाना साहब के मकान को गिराने की बात की जा रही है।

ख) सेनापति के होश क्यों उड़ गए?

उत्तर : सेनापति को जब यह पता चला कि उनके सामने खड़ी बालिका उनकी मृत पुत्री मेरी सहेली मैना जो कि नाना साहब की कन्या है तब उसके होश उड़ गए।

ग) मैना ने सेनापति को क्या याद दिलाया?

उत्तर : मैना ने सेनापति को यह याद दिलाया कि वह उनकी मृत पुत्री मेरी की अभिन्न सहेली है और साथ ही वे भी उससे पुत्री समान ही व्यवहार करते थे और उनके घर आया-जाया करते थे।

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

2x4=8

1. 'साँवले सपनों की याद' पाठ में लेखक ने सलीम अली के व्यक्तित्व का जो चित्र खींचा है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : सलीम अली अनन्य प्रकृति-प्रेमी थे। प्रकृति तथा पक्षियों के प्रति उनके मन में कभी न खत्म होने वाली जिज्ञासा थी। लेखक के शब्दों में, "उन जैसा 'बर्ड-वाचर' शायद कोई हुआ है।" उनका स्वभाव भ्रमणशील था। लम्बी यात्राओं ने उनके शरीर को कमज़ोर कर दिया था। व्यवहार में वे सरल-सीधे और भोले इंसान थे। वे बाहरी चकाचौंध और विशिष्टता से दूर थे।

2. 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

उत्तर : टीला रास्ते की रुकावट का प्रतीक है। इस पाठ में टीला शब्द सामाजिक कुरीतियों, अन्याय तथा भेदभाव को दर्शाता है क्योंकि यह मानव के सामाजिक विकास में बाधाएँ उत्पन्न करता है।

3. 'हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था'। - उक्त कथन के अनुसार हमारे आचार-व्यवहार के तरीके वेशभूषा के आधार पर तय होते हैं। आपकी समझ से यह उचित है अथवा अनुचित, विचार व्यक्त करें।

उत्तर : सामान्यतया लोगों में एक धारणा बन गई है कि पहली बार मिलने वाले व्यक्ति का आंकलन उसकी वेशभूषा देखकर किया जाता है। हम अच्छा पहनावा देखकर किसी को अपनाते हैं तो

गंदे कपड़े देखकर उसे दुत्कारते हैं। लेखक भिखमंगों के वेश में यात्रा कर रहा था। इसलिए उसे यह अपेक्षा नहीं थी कि शेकर विहार का भिक्षु उसे सम्मानपूर्वक अपनाएगा। मेरे विचार से वेशभूषा देखकर व्यवहार करना पूरी तरह ठीक नहीं है। अनेक संत-महात्मा और भिक्षु साधारण वस्त्र पहनते हैं किंतु वे उच्च चरित्र के इंसान होते हैं, पूज्य होते हैं। हम पर पहला प्रभाव वेशभूषा के कारण ही पड़ता है। उसी के आधार पर हम भले-बुरे की पहचान करते हैं। परन्तु अच्छी वेशभूषा में कुतिस्त विचारों वाले लोग भी हो सकते हैं। गरीब व्यक्ति भी चरित्र में श्रेष्ठ हो सकता है, वेशभूषा सब कुछ नहीं है। कीचड़ में खिलने पर भी कमल अपनी सुंदरता बनाए रखता है।

4. लेखिका महादेवी ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर : महादेवी की माता अच्छे संस्कार वाली महिला थीं। वे धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। वे पूजा-पाठ किया करती थीं। वे ईश्वर में आस्था रखती थीं। सवेरे "कृपानिधान पंछी बन बोले" पद गाती थीं। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा के पद गाती थीं। वे लिखा भी करती थीं। लेखिका ने अपनी माँ के हिंदी-प्रेम और लेखन-गायन के शौक का वर्णन किया है। उन्हें हिंदी तथा संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। इसलिए इन दोनों भाषाओं का प्रभाव महादेवी पर भी पड़ा।

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (1+2+2)=5

एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर

दूर उड़ती है गगन में।
औ यहीं से
भूमि ऊँची है जहाँ से
रेल की पटरी गयी है
ट्रेन का टाइम नहीं है
मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ
जाना नहीं है।

1. काले माथे और सफ़ेद पंखों वाली चिड़िया आपकी दृष्टि में किस प्रकार के व्यक्तित्व का प्रतीक हो सकती है?

उत्तर : काले माथे और सफ़ेद पंखों वाली चिड़िया यहाँ पर दोहरे व्यक्तित्व का प्रतीक हो सकती है। ऐसे लोग एक ओर तो समाज के हितचिंतक बने फिरते हैं और मौका मिलते ही अपना स्वार्थ साध लेते हैं।

2. 'टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर' पंक्ति का क्या अर्थ है?

उत्तर : एक काले सर वाली चालाक चिड़िया अपने सफ़ेद पंखों के झपाटे से जल के हृदय पर तेजी से टूट पड़ती है और एक चतुर मछली को अपने पीले चोंच में दबाकर आसमान में उड़ जाती है।

3. 'मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ' - पंक्तियों से कवि क्या तात्पर्य है?

उत्तर : इन पंक्तियों द्वारा कवि यह कहना चाह रहा है कि उसे कहीं जाने की जल्दी नहीं है इसलिए वह उस जगह की सुंदरता को देखने के लिए पूरी तरह स्वच्छंद है।

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

2x4=8

1. मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर : कवि ने मेघों में सजीवता लाने के लिए बन ठन की बात की है। जब हम किसी के घर बहुत दिनों के बाद जाते हैं तो बन

सँवरकर जाते हैं ठीक उसी प्रकार मेघ भी बहुत दिनों बाद आए हैं क्योंकि उन्हें बनने सँवरने में देर हो गई थी।

2. कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?

उत्तर : कवि को बचपन में माँ ने यह सिखाया था कि दक्षिण दिशा की ओर यमराज का घर होता है अतः वहाँ पर कभी अपने पैर करके नहीं सोना उस तरफ़ पैर रखकर सोना यमराज को नाराज करने के समान है। माँ द्वारा मिली इस सीख के कारण कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल नहीं हुई।

3. आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए? उन्हें क्या करने के मौके मिलने चाहिए?

उत्तर : मेरे विचार से बच्चों को काम पर इसलिए नहीं भेजा जाना चाहिए क्योंकि बचपन का समय उनके शारीरिक मानसिक और बौद्धिक विकास, खेल-कूद, नई-नई चीजों को सिखना, ज्ञान प्राप्त करना तथा जीवन को भरपूर जीने का समय होता है न कि रोजी-रोटी की चिंता में घुल-घुल कर जीने का समय होता है।

4. वैभव की रखवाली-सी, कोकिल बोलो तो!- पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : मृदुल वैभव की रखवाली-सी से कवि का तात्पर्य कोयल की मीठी सुरीली तथा मोहक आवाज़ से है। आज के इस कष्टमय संसार में कुछ मृदुलता और सरसता बची है तो वह कोयल की आवाज़ में ही बची है। परन्तु जब वह वेदनापूर्ण आवाज़ में चीखती है तो कवि उसकी इस वेदना का कारण जानना चाहता है।

प्र. 9. शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की - समाज को कैसे व्यक्तित्व की जरूरत है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

4

उत्तर : समाज में आज उमा जैसे व्यक्तित्व, स्पष्टवादिनी तथा उच्च चरित्र वाली लड़की की ही आवश्यकता है। ऐसी लड़कियाँ ही गोपाल प्रसाद

जैसे दोहरी मानसिकता रखने वाले, लालची और ढोंगी लोगों को सबक सिखा सकती है। ऐसी लड़कियों से ही समाज और देश प्रगति कर पाएगा जो आत्मविश्वास से भरी तथा निडर हो। इसके विपरीत शंकर जैसे लड़के समाज के लिए निरुपयोगी है। शंकर जैसे व्यक्ति समाज को कोई दिशा नहीं प्रदान कर सकते हैं।

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

'वृक्ष लगाओ देश बचाओ'

भारतीय संस्कृति की परंपरा के अनुसार पेड़ को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है। यह हमारे जीवन का आवश्यक अंग है। वृक्ष के बिना हम भी अधिक समय तक अपने अस्तित्व को जिंदा नहीं रख सकते। वन वातावरण में से कार्बन डाईऑक्साइड को कम करते हैं। वातावरण को शुद्ध बनाते हैं। बहुमूल्य ऑक्सीजन देते हैं। पेड़ हमें भोजन, घरों के निर्माण और फर्नीचर बनाने के लिए हमें लकड़ी प्रदान करते हैं। वे हमें ईंधन के लिए लकड़ी उपलब्ध कराते हैं। हमें विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियाँ देते हैं। बढ़ती आबादी, शहरीकरण के कारण हरियाली तेजी से कम हो रही है। जितनी तेज़ी से हम इनकी कटाई कर रहे हैं, उतनी तेज़ी से ही हम अपनी जड़ें भी काट रहे हैं। वृक्षों के कटाव के कारण आज भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गई है। पेड़ों का क्रूर वध हमारे विनाश में सहायक होगा। रेगिस्तान का विस्तार होगा, नदियाँ सूख जाएगी, पानी की कमी होगी, भूमि बंजर हो जाएगी, प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा। हमारा अस्तित्व उन पर निर्भर करता है इसलिए हमें पेड़ों की रक्षा करनी होगी। पर्यावरण की समस्याओं का एकमात्र समाधान पेड़ों की सुरक्षा है। सरकार ने जनमानस को जागृत करने के लिए 1950 में वन महोत्सव कार्यक्रम आरंभ किया। पर्यावरण को बचाने के लिए यह हमारे जागने का वक्त है। सिर्फ जागने का ही नहीं, कुछ करने का भी। इसके लिए जरूरी है कि हम पेड़ लगाएँ। विनोबा भावे ने हर व्यक्ति को एक पेड़ लगाना चाहिए यह संदेश दिया है।

प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना होगा कि वन ही जीवन है, इस वन-जीवन से हम प्यार करें और वृक्षों को लगाकर इसकी रक्षा करें।

बढ़ती जनसँख्या

बढ़ती हुई जनसँख्या हमारे देश में एक विकराल रूप लेती जा रही है। किसी भी देश की जनसंख्या यदि उस देश के संसाधनों की तुलना में अधिक हो जाती है तो वह देश पर अनचाहा बोझ बन जाती है। जनसंख्या बढ़ने से जीवन की प्राथमिक आवश्यकताएँ - भोजन, वस्त्र और मकान भी पूरे नहीं पड़ते।

बढ़ती हुई जनसँख्या किस तरह से संसाधनों को निगलती जा रही है इसका सबसे बड़ा उदाहरण है बढ़ती हुई महँगाई। बढ़ती जनता को रोजगार देने के लिए, जंगलों को खत्म करने के बाद बढ़ता औद्योगिकरण अब हमारे गाँव में पैर पसार रहा है! फलस्वरूप कम्पनियों की फैक्ट्रियों अब गाँव की शुद्ध जलवायु में जहर घोल रही है वहाँ की उपजाऊ जमीन पर बसी फैक्ट्री अब गेहूँ के दाने नहीं वो काँच के गोलियाँ पैदा कर रही है! आबादी बढ़ने से स्थिति और भी अधिक भयावह हो जाएगी, तब जलापूर्ति, आवास, परिवहन, गंदे पानी का निकास, बेरोजगारी का अतिरिक्त भार, महँगाई, बिजली जैसी आधारभूत संरचना पर अत्यधिक दबाव पड़ता नजर आएगा।

सरकार को चाहिए कि वो कुछ गंभीर और सख्त नियम बनाए। जिससे जनसँख्या नियंत्रित की जा सके। आज जनसंख्या के मामले में राष्ट्र को सही शिक्षा देने की सबसे ज्यादा जरूरत है क्योंकि शिक्षा, राष्ट्र की सबसे सस्ती सुरक्षा मानी जाती रही है। जन जागरण अभियान, पुरुष नसबंदी, गर्भ निरोधक गोलियाँ, देर से विवाह जनसंख्या को रोकने के उपाय हैं।

प्र.11. अपने छोटे भाई को गणतंत्र दिवस का महत्त्व पत्र द्वारा समझाइए। 5

निर्मला भवन

सरला नगर

राजापुर

दिनांक - 2 जनवरी 2015

प्रिय सागर

सस्नेह

तुम्हारा पत्र मिला। यहाँ सब ठीक है, आशा है तुम वहाँ सकुशल होगे। पत्र में तुम गणतंत्र दिवस के बारे में जानना चाहते थे और यह बहुत खुशी की बात है।

हमारा देश 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्र होने से पहले देश के नागरिक 26 जनवरी को स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रतिज्ञा लिया करते थे। 26 जनवरी, 1950 को हमारे देश ने एक संविधान स्वीकार किया है। इसी कारण यह दिवस राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है। संविधान ने प्रत्येक नागरिक को कुछ अधिकार दिए हैं। इसके साथ कुछ उत्तरदायित्व भी सौंपे हैं। इन्हें हम संविधानिक उत्तरदायित्व कहते हैं। जैसे कानून का पालन करना, राष्ट्रीय धरोहर की देखभाल करना, सार्वजनिक स्थान पर अनुशासन बनाए रखना भी हमारी जिम्मेदारी है।

आशा है, तुम गणतंत्र दिवस और अपनी जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से समझ गए होगे। अपना ख्याल रखना और पत्र लिखते रहना।

तुम्हारी बहन

सीमा

प्र. 12 दो मित्र के मध्य व्यायाम के महत्त्व को लेकर हो रहे संवाद लिखिए। 5

ताहिर : कल कहाँ थे विक्रम?

विक्रम : घर पर ही था, तबियत ठीक नहीं थी।

ताहिर : क्या हुआ था? डॉक्टर को दिखाया?

विक्रम : नहीं डॉक्टर को नहीं दिखाया। वैसे कुछ खास नहीं पर क्या बताऊँ कुछ दिनों से थकान और बार-बार सिरदर्द रहता है।

ताहिर : तुम्हें व्यायाम की आवश्यकता है। दिनभर ऑफिस में बैठने से भी ऐसी समस्याएँ होती हैं।

विक्रम : मुझे नहीं पसंद व्यायाम करना।

ताहिर : नहीं मित्र, व्यायाम से तुम्हारे शरीर में स्फूर्ति आएगी और बीमारियाँ दूर भागेगी।

विक्रम : बड़ी आलस आती है।

ताहिर : ज्यादा नहीं तो सुबह में आधा घंटा चला करो और कुछ हलकी सी कसरत कर लिया करो। मैं तो रोज सुबह चलने जाता हूँ।

विक्रम : अच्छा! तो कल से मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगा।

ताहिर : यह हुई न बात।

विक्रम : कल सुबह मिलते हैं।